" उ प सं हा र "

उपसंहार :

भगवतीचरण वर्मा बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार हैं। भगवतीबाबूने अपनी रचनाओंमें बहुमुखी प्रतिभा का दर्शन दिया है। भगवतीबाबू को साहित्यिक जगत् में श्रेष्ठ उपन्यासकार के रूप में अधिक प्रसिध्दी मिली। "भूले-बिसरे चित्र" उनका एक सुप्रसिध्द उपन्यास है, जिसको "साहित्य अकादमी पुरस्कार" प्राप्त हो चुका है। "भूले-बिसरे चित्र" एक बृहत भारतीय जीवन का चित्र है।

मैंने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास पर शोध-कार्य करते समय इस उपन्यास को चार अध्यायों में विभाजित किया है। अनुसंधान की सुविधा के लिए "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के चार अध्यायों का सारांश निम्नलिखित है।

१] प्रथम अध्याय में भगवतीचरण वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने से पता चलता है कि, भगवती-चरण वर्मा का व्यक्तित्व विविधमुखी है। वर्माजीको अपने प्रारंभिक जीवन में अनेक कठिनाईयों का तथा संघर्षों का सामना करना पड़ा। वर्माजी नौकरी में व्यस्त रहते हुए भी किसी न किसी प्रकार से साहित्यसेवा करते रहे हैं।

साहित्यिक जगत् में उनका पदार्पण कवि के रूप में हुआ। भगवतीचरण वर्मा ने साहित्य की विविध विधाओं में [कहानी, कविता, नाटक, निबंध तथा उपन्यास आदि में] लेखन का कार्य किया। वर्माजी एक सफल उपन्यासकार के रूप में हिन्दी साहित्य में पहचाने जाते हैं।

२] द्वितीय अध्याय में भगवतीबाबू के उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया है। उनके उपन्यासों का अध्ययन करने से पता चलता है कि, भगवतीबाबू के उपन्यास विविधकोटी में आते हैं। वर्माजीने ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा सामाजिक उपन्यास अधिक लिखे हैं। "भूले-बिसरे चित्र", "सीधी-सच्ची बातें", "टेढ़ें-मेढ़ें रास्ते" आदि उपन्यासों में स्वाधीनतापूर्व तथा स्वाधीनता के बाद के सामाजिक तथा राजकीय जीवन का चित्रण मिलता है।

३] तृतीय अध्याय में "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज का चित्रण किया है। तृतीय अध्याय में संयुक्त परिवार की व्यवस्था, उँच-नीच की, जाती-पाँती की समस्या, छुआछूत की समस्या, सामंत - जमींदारी प्रथा तथा नारी की अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। अत: तृतीय अध्याय में मैंने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में चित्रित संयुक्त परिवार की चार पीढ़ियों का परिवर्तनशील रूपों में विवेचन किया है।

४] चतुर्थ अध्याय में भगवतीचरण वर्मा कृत "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज की विशेषताओं का परिचय दिया है। "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास स्वाधीनतापूर्व भारतीय सामाजिक जीवन का बृहत् चित्रण करता है। इन विविध समाज की विशेषताओं का परिचय चतुर्थ अध्याय में प्रस्तुत किया है।

५] अनुसंधान की उपलब्धियाँ -

भगवतीचरण वर्माजी के "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास का अनुसंधान करते समय मेरे मन में तीन प्रश्न उपस्थित हुए थे, जिनका विवेचन मैंने प्रस्तावना में किया है। अब "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास का अनुसंधान कार्य पूरा होने के बाद उन प्रश्नों के उत्तर मुझे मिले हैं।

अत: उन प्रश्नों के उत्तर निम्न रूप में दिए जा रहे हैं।

[१] "भूले-बिसरे चित्र" शीर्षक का अर्थ क्या है ?

उत्तर - भगवतीचरण वर्मा एक सफल उपन्यासकार हैं। वर्माजीके उपन्यास साहित्य में सर्वथा युग-भावना के स्पन्दन और क्रन्दन का स्वर सुनाई पड़ता है। भगवतीबाबू युग के गतिशील धरातलपर युग-चेतना के साथ सामंजस्य स्थापित कर साहित्य-सृजन करनेवाले आज हिन्दी के अकेले उपन्यासकार हैं।

"भूले-बिसरे चित्र" उसका एक बृहत स्वाधीनतापूर्व भारतीय जीवन का चित्रण करनेवाला श्रेष्ठ उपन्यास है। वर्माजीने इस उपन्यास को पाँच खण्डों में विभाजित किया है। इसमें सं. १८८५ ई. से सं. १९३० ई. तक की चार पीढ़ियों का वर्णन मिलता है। इसमें अनेक घटनाओंका चित्रण परिवर्तनशील रूपों में मिलता है। "भूले-बिसरे चित्र" में एक मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार के चार पीढ़ियों की कथा है, जिसमें सामंतीय जीवन को टूटते, मध्यवर्ग को पनपते और अन्त में मध्यवर्गीय धारणाओंके -ह्रास का प्रारम्भ होते देखा और युगपरिवर्तनों के परिणामों को झेला है।

अत: "भूले-बिसरे चित्र" शीर्षक का अर्थ तत्कालीन भारत के "भूले-बिसरे चित्रों" के माध्यम से आपकी संवेदनाओं को गहरा रंग देना है। उपन्यास को पढ़ते समय हम भारतीय अतीत में खो जाते हैं। "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास का कैनवस अत्यंत विशाल है और उस पर तद्युगीन भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक जीवन की झाँकी उभर आयी है। उपन्यास के कथानक में सुसंबधता नहीं है, घटनाओं में एकरसता नहीं है। फिर भी इन भूले-बिसरे चित्रों के माध्यम से वर्माजीने स्वाधीनता पूर्व भारतीय सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त कर ली है।

इस प्रकार "भूले-बिसरे चित्र" शीर्षक का अर्थ अनेक घटनाओं तथा पात्रों के माध्यम से भारतीय सामाजिक जीवन का सही चित्र प्रस्तुत करना है।

[२] क्या "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में सही अर्थों में स्वाधीनतापूर्व भारतीय समाज प्रतिबिंबित हो चुका है?

उत्तर :- "भूले-बिसरे चित्र" वर्माजीकृत एक सफल सामाजिक उपन्यास है। वर्माजीने इस उपन्यास में एक मध्यवर्गीय कायस्थ संयुक्त परिवार की चार पीढ़ियों के माध्यम से तत्कालीन भारत का चित्रण किया है। वर्माजीने सं. १८६५ ई. से लेकर सं. १९३० ई. तक का युगानुरूप परिवर्तनशील रूपों में चित्रण किया है।

"भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास की कथा सं. १८८५ ई. से मुंशी शिवलाल के संयुक्त परिवार से शुरु हो जाती है और सं. १९३० ई. तक उनके पोते नवल तथा विद्या का गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित होने के समय में कथा का अंत हो जाता है। कथानक के बीच में घटनावैविध्य पाया जाता है। विविध घटनाओं को लेकर वर्माजीने स्वतंत्रतापूर्व भारतीय सामाजिक जीवन की अनेक झांकियाँ प्रस्तुत की है। वह कालखंड अंग्रेजो का होने के कारण उसकी अनेक प्रथाओं का चित्रण "भूले-बिसरे चित्र" में मिलता है। जैसे जमींदारी प्रथा, ऊँच-नीचकाभेद-भाव, संयुक्त परिवार में विघटन की समस्या, छुआछूत की समस्या, नारी की अनेक समस्या , सामंतीय जीवन की कुप्रथायें तथा अफसर वर्ग में युगानुरूप बदलते हुए परिवर्तनों का सही चित्रण उपन्यास में प्रतिबिंबित हुआ है।

[३] "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यासमेंकिन समस्याओं का चित्रण हुआ है ?

उत्तर :- भगवतीचरण वर्माजीकृत "भूले-बिसरे चित्र" एक विशालकाय सामाजिक उपन्यास है। भगवतीबाबूने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में सं. १८८५ ई. से सं. १९३० ई. तक के भारतीय सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। यह एक बृहत उपन्यास होने के कारण इसमें विविधमुखी भारतीय सामाजिक जीवन मुखरित हो उठा है।

अत: "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में भगवतीचरण वर्माने निम्नलिखित समस्याओंका चित्रण किया है।

[१] संयुक्त कुटुंब व्यवस्था का टूटता हुआ रूप - "भूले बिसरे चित्र" उपन्यास में मुंशी शिवलाल तथा ज्वालाप्रसाद के माध्यम से टूटते हुए संयुक्त परिवार का चित्र वर्माजीने चित्रित किया है।

[२] वर्ण-व्यवस्था - "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में छिनकी कहारीन तथा घीसु के माध्यम से वर्णव्यवस्था की समस्यापर वर्माजी ने प्रकाश डाला है।

[३] दहेज प्रथा - वर्माजीने दहेजप्रथा पर प्रकाश विद्या के माध्यम से डाला है।

[४] अवैध प्रेम की समस्या - भगवतीबाबु ने अवैध प्रेम की समस्या का व्यापक धरातल पर चित्रण छिनकी, जैदेई, संतो आदि के माध्यम से किया है।

[५] विधवा समस्या - "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में विधवा समस्या का अभिशाप भोगनेवाली जैदेई को कई स्थों में चित्रित किया है।

[६] हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष - हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष बीसवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अंग है। मुस्लिम स्वतंत्रता-संग्राम के विरोधी हो गए। इस रहस्य का उद्घाटन वर्माजी "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास के एक पात्र डिप्टी अब्दुल हक द्वारा करते हैं।

[७] सामंत और जमींदार - "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में भगवतीचरण वर्माने व्यापक धरातलपर सामंतशाही तथा जमींदारी की कुप्रथाओं का सही चित्रण किया है। ठाकुर गजराजसिंह तथा लाला प्रभुदयाल के माध्यम से वर्माजीने सामंतशाही तथा जमींदारीवर्ग की समस्याओंपर प्रकाश डाला है।

सारांश रूप से कहा जा सकता है कि, "भूले-बिसरे चित्र" एक विशाल सामाजिक उपन्यास है। वर्माजीने "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में संपूर्ण स्वातंत्र्यपूर्व भारतीय सामाजिक जीवन की समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

६] अनुसंधान की नई दिशाएँ -

[१] "भूले-बिसरे चित्र" उपन्यास में चित्रित नारी जीवन।"

[२] "भूले-बिसरे चित्र उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज का मूल्यांकन।" आदि विषयों को लेकर अनुसंधान किया जा सकता है।